कुछ चीजें
कमजोर
हिफाजत में मजबूत
रहती है जैसे मिट्टी के
गुल्लक में लोहे के
सिक्के।
– अज्ञात

ऐतिहासिक फैसला लिया

हालांकि इसी बीच, पिछले साल 5 अगस्त को केंद्र सरकार ने अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू कश्मीर को मिला विशेष दर्जा खत्म करने का ऐतिहासिक फैसला लिया, जिसके बाद राज्य के दोनों बड़े दलों के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था।

भारती शर्मा।

जम्मू–कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर जीसी मुर्मू ने पिछले दिनों कहा कि राज्य में विधानसभा क्षेत्रों के परिसीमन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद वहां चुनाव कराए जा सकते हैं। एलजी के बयान से इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि जम्मू–कश्मीर का स्थानीय प्रशासन वहां की मौजूदा स्थिति को चुनाव करवाने लायक मानता है। ध्यान रहे, जून 2018 से ही वहां निर्वाचित सरकार नहीं है। हालांकि इसी बीच, पिछले साल 5 अगस्त को केंद्र सरकार ने अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू कश्मीर को मिला विशेष दर्जा खत्म करने का ऐतिहासिक फैसला लिया, जिसके बाद राज्य के दोनों बड़े दलों के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। स्वाभाविक था कि ऐसी स्थिति में चुनाव नहीं कराए जा सकते थे। मगर उस घटना को भी एक साल होने को है। पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती को छोड़कर सभी बड़े नेता रिहा हो चुके हैं। महबूबा भी हिरासत में भले हों, लेकिन अपने घर आ चुकी हैं। नैशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने एक अखबार को दिए हालिया इंटरव्यू में कहा कि जब तक जम्मू–कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा नहीं मिल जाता, वे चुनाव नहीं लड़ेंगे। लेकिन उन्होंने चुनावों के बायकॉट का आह्वान नहीं किया, न ही यह कहा कि उनकी पार्टी चुनाव नहीं लड़ेगी।

इस बीच पाकिस्तान अपना राग कश्मीर ज्यादा बड़े पैमाने पर छेड़ने की फिराक में है। अनुच्छेद 370 खत्म किए जाने का एक साल पूरा होना भी उसके लिए एक मौका है, जिसे भुनाने का हर संभव प्रयास करने के लिए उसने कमर कस ली है। पाकिस्तान सरकार ने एक 18 सूत्री कार्यक्रम तैयार किया है, जिसके जरिए दुनिया का ध्यान कश्मीर मुद्दे की ओर खींचने का प्रयास किया जाएगा। अपनी ऐसी ही एक कोशिश में वह पिछले हफ्ते मुंह की खा चुका है, जब पाकिस्तानी पीएम इमरान खान ने बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को फोन कर उनसे 15 मिनट बातचीत की। उसके बाद पाक विदेश मंत्रालय ने बातचीत का ब्योरा जारी कर कहा कि दोनों प्रधानमंत्रियों ने कश्मीर के हालात पर विस्तार से विचार–विमर्श किया।

इसके विपरीत बांग्लादेश सरकार की ओर से जारी किए गए इसी बातचीत के ब्योरे में कश्मीर मसले का कहीं कोई जिक्र ही नहीं था। मगर ऐसे झटकों से पाकिस्तान को कोई फर्क नहीं पड़ता। इसी बुधवार पाकिस्तान सरकार ने कश्मीर के अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी को निशान–ए–पाकिस्तान से नवाजने का ऐलान किया, जो वहां का सबसे बड़ा सम्मान है। जाहिर है, पाकिस्तान ऐसी हर मुमकिन कोशिश कर रहा है और करता रहेगा जिससे कश्मीर मसले का अंतरराष्ट्रीयकरण होने की उसे उम्मीद होगी। अब तक का अनुभव बताता है कि ऐसी कोशिशों से कुछ होना–जाना नहीं है। लेकिन जम्मू–कश्मीर में आम जन के लिए स्थिति सामान्य बनाना भारत सरकार की जिम्मेदारी है। इसके लिए यह जरूरी है कि वहां जल्द से जल्द चुनाव कराए जाएं और लोगों के सभी नागरिक और लोकतांत्रिक अधिकार बहाल किए जाएं।

परित्याग

अशोक वोहरा। मान लीजिए आप किसी विपरीत स्थिति का सामना कर रहे हैं, आपको किसी की मदद, किसी के सुझाव की आवश्यकता है ताकि जो विनाश हो रहा है उसे नियंत्रित किया जा सके। ऐसे हालातों में आप क्या करेंगे? कुछ लोग असफलता का परित्याग नहीं करते, जबकि उन्हें अनुकूल या नतीजों को ग्रहण करना आना चाहिए। परंतु जब समस्या बेहतरीन तरीके से सुलझ जाती है तो वे उसका क्रेडिट लेने लगते है। स्वार्थ सिद्धि हर व्यक्ति के दिमाग पर हावी रहती है और यह बेहद प्रासांगिक सत्य है। सलाह देना तभी फायदेमंद होता है, जब किसी को वाकई उसकी आवश्यकता हो और वह पूरी तन्मयता के साथ उसे ग्रहण का इच्छुक भी हो। अगर आपकी जॉब ही सलाहकार की है तो वह सलाह आपको अपने जॉब के दायरे में रहकर ही देनी चाहिए। फ्री की एडवाइस या सुझाव देना आपके लिए कदापि सही नहीं होगा।

संपादकीय

राम को राम रहने दो

सुप्रीमकोर्ट में रामलला की जीत हुई और भव्य राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उसी राम मंदिर की 05 अगस्त को आधारशिला रखी। हालांकि यह कार्यक्रम कोरोना संक्रमण कि वजह से बेहद सीमित दायरे में हुआ। श्रीराम लला ट्रस्ट ने सीमित लोगों को ही आमंत्रित किया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की निगरानी में पूरी अयोध्या को त्रेतायुग का लुक दिया गया। आधुनिक विद्युत झालरें और पेंटिग कि वजह से अयोध्या में दिपावली का नजारा रहा। पूरी अयोध्या के साथ देश में दीपावली मनाई गई। सनातन धर्म और संस्कृति के लिए यह गर्व का दिन है। क्योंकि श्रीराम का वनवास लंबे इंतजार के बाद खत्म हुआ। श्रीराम जन्मभूमि को लेकर 500 सालों तक विवाद चला। 1528 में बाबर के सेनापति मीरबाकि की तरफ से मंदिर को तोड़कर मस्जिद बना दी गई और उसे बाबरी मस्जिद का नाम दे दिया गया। जिसके बाद से हिंदू और मुस्लिम समुदाय के लोग उस पर दावा ठोंकते रहे। इस दौरान अनगिनत रक्तपात हुए। अयोध्या विवाद के हल करने के लिए इन 20 सालों में काफी पहल हुई लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। यह मुद्दा सियासी दलों के लिए वोट बैंक बन गया। 1986 में राम मंदिर का ताला खुलवाने के बाद भी तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी भी इसी राजनीति कि वजह से कुछ नहीं कर पाए। हिंदुत्व के परख समर्थ बालासाहब ठाकरे भी इस आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई। अब वक्त आ गया जब इस विवाद का खात्मा हो चाहिए। अब राम को राम ही रहने दिया जाय। सत्ता के लिए उन्हें राजनीति का राम न बनाया जाय।

अयोध्या के कण–कण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बसे हैं। इसे हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख धर्म का मौलिक स्वरूप माना जाता है। सरयू नदी के पावन तट पर बसी है अयोध्या।

भगवान की नगरी

प्रभुनाथ शुक्ल।।

अयोध्या और राम एक दूसरे के पूरक हैं। राम से अयोध्या है और अयोध्या श्रीराम का जीवन संस्कार है। हिंदू धर्म की पौराणिक मान्यता के अनुसार अयोध्या सप्त पुरियों मथुरा, माया , काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका में शामिल है। श्रीराम की नगरी अयोध्या को अथर्ववेद में भगवान की नगरी कहा गया है। अयोध्या के शाब्दिक विश्लेषण से पता चलता है कि अ से ब्रह्मा, य से विष्णु और ध से रुद्र यानी त्रिदेव का स्वरूप है अयोध्या। जहां ब्रह्मा, विष्णु और शंकरजी स्वयं विराजमान हैं। अयोध्या के कण–कण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बसे हैं। इसे हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख धर्म का मौलिक स्वरूप माना जाता है। सरयू नदी के पावन तट पर बसी है अयोध्या। इसकी स्थापना महाराज मनु ने की थीं। इसे साकेत के नाम से भी जाना जाता है।

सुप्रीमकोर्ट के फैसले के बाद अयोध्या में 05 अगस्त को भव्य राम मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। जिसकी आधारशिला बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रखेंगे। हालांकि इस मुहूर्त को लेकर काफी विवाद भी उठा है। जिस पर संत समाज विभाजित हैं। अयोध्या को दुल्हन की तरह सजाया गया है। सरयू नगरी इंद्रधनुष

के रंग में रंग उठी है। पूरी अयोध्या चित्र शैली में रंग उठी है। अयोध्या से जिस तरह की तस्वीरें आ रहीं हैं, उससे यहीं लग रहा है कि जैसे भगवान विश्वकर्मा स्वयं अयोध्या उतर आए हैं। धर्मिक मान्यता के अनुसार जब महाराज मनु ने ब्रम्हा से अपने लिए एक नगर निर्माण की माँग कि, तो विष्णुजी ने उन्हें साकेत को सबसे उचित स्थान बताया। बाद में मनु के साथ भगवान विश्वकर्मा को भेजा गया। स्घ्कंदपुराण के अनुसार अयोध्या भगवान विष्णु के चक्र पर विराजमान है। भगवान श्रीराम के बाद बाद लव ने श्रावस्ती को बसाया। कुश ने एक बार पुनः राजधानी अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया।

श्रीराम विकारों से मुक्त उत्तम और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। इसी लिया उन्हें श्रेष्ठ मर्यादा का वाहक मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। वह धर्म, विवेक और आदर्श, के साथ मर्यादा और नैतिकता के प्रतीक हैं। वह मनवता के धर्मप्राण हैं। अहंकार और अविवेक रहित हैं। वह क्रोध, पाप से बिलग हैं। वह समदर्शी हैं। उन्होंने अपने निहित स्वार्थ के लिए धर्म की ध्वज को कभी गिरने नहीं दिया। न्याय और धर्म को हमेशा शीर्ष पर रखा। पिता महराज दशरथ और माँ कैकैई के वचनों के अनुपालन में राजसत्ता और वनवास को त्याग दिया। प्रजा के भावनाओं को उन्होंने हमेशा सम्मान किया। अयोध्या की प्रजा कि तरफ से आशंका उठने पर माँ सीता को वनवास भेज दिया। श्रीराम लोक मर्यादा को कहीं से भी भंग नहीं होने दिया। यहीं वजह रहीं कि वह लोकरंजक कहलाए। उन्हें प्रजारंजक कहा गया। राज्य विस्तार को उन्होंने सिरे से खारिज किया। लंका को जीत कर विभीषण का राजतिलक किया। बालि के कुकर्मों का अंतकर सुग्रीव को राजा बनाया तो अंगद को युवराज। राक्षसों को वध कर दण्डकारण्य ऋषियों और मुनियों को दिया।

श्रीराम हिंदुत्व के ध्वजवाहक हैं। वह धर्म हैं, संस्कार हैं। संस्कृति हैं। श्रीराम हिंदुत्व के राग, रंग और संस्कार हैं। वह मानववता के आधार स्तम्भ हैं। उनका अवतार ही इस धरा पर धर्म के अवतार के रूप में हुआ। मानवता के कल्याण और समाज के आदर्शवाद के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन लोक कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

सूडोकु नवताल- 5431

कठिनतम

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

Jagrutidaar.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5430 का हल

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7

अपना ब्लॉग

रघुवंशी राजाओं की प्राचीन राजधानी

मोहन। श्रीराम की अयोध्या रघुवंशी राजाओं की बेहद प्राचीन राजधानी थी। यह यह कौशल की राजधानी थी। वाल्मीकि रामायण में अयोध्या 12 योजन लम्बी और 3 योजन चौड़ी बताई गई है। आईन–ए–अकबरी के अनुसार अयोध्या कि लंबाई 148 कोस तथा चौड़ाई 32 कोस मानी गई है। 'कोसल नाम मुदितरू स्फीतो जनपदो महान। निविष्टरू सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान' का उल्लेख है। अयोध्या के दर्शनीय स्थलों में हनुमान गढ़ी, रामदरबार, सीतामहल, राम की पैड़ी, गुप्त द्वार घाट, कैकेयी घाट, कौशल्या घाट, पापमोचन घाट, लक्ष्मण जैसे प्रमुख स्थल हैं। भगवान राम का जन्म चौत्र मास की नवमी को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है। कहते हैं कि 1528 में बाबर के सेनापति मीरबकी ने अयोध्या में राम जन्मभूमि पर स्थित मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनवाई। अयोध्या का का शाब्दिक अर्थ है जहाँ कभी युध्द न हुआ हो अर्थात अ–युध्य अथार्थ 'जहां कभी युद्ध नहीं होता।